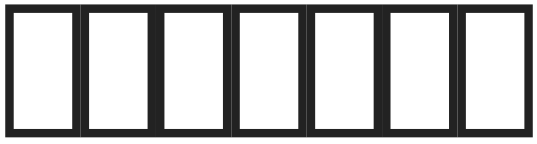


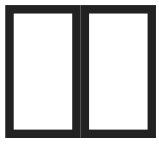


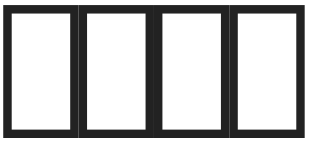
:

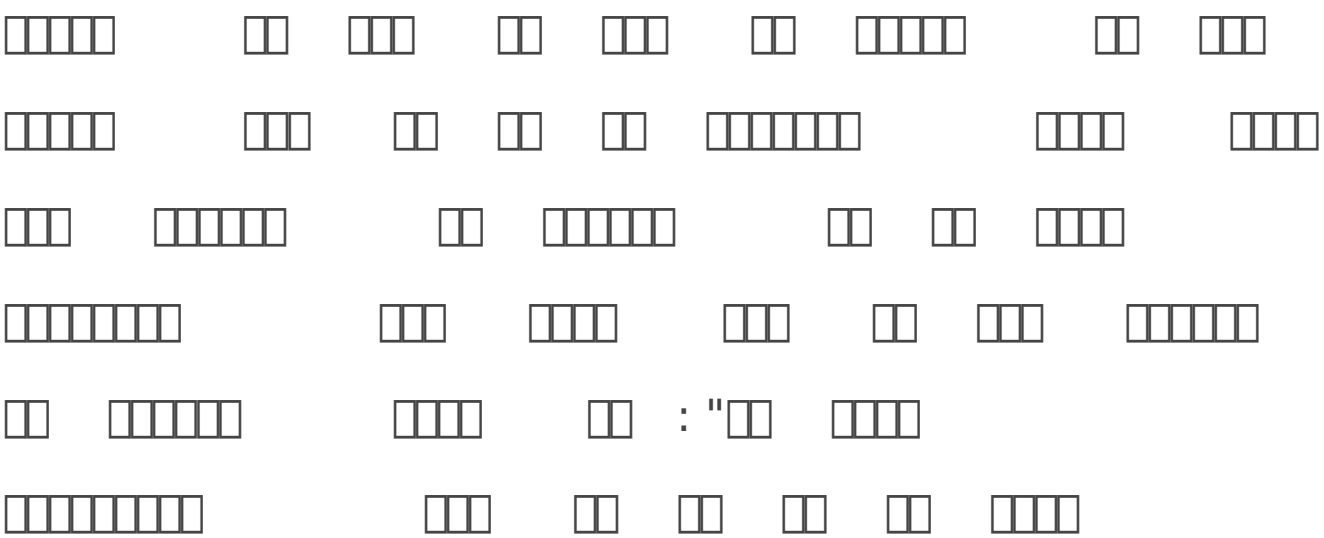


,









तुम्हारे लिए तुम ही में से जीवन साथी बनाए, ताकि तुम उनके पास सुकून पाओ, और उसने तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत
रख दी। बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोचते समझते हैं। "1

इस एक आयत में निकाह का पूरा मक़सद आ गया है। पहली बात है सुकून , यानी घर
ऐसी जगह हो जहाँ दिन भर की थकान उतर
जाए। दूसरी बात है मुहब्बत , जो दिल
में भी हो और बातचीत और बर्ताव में भी दिखे। और तीसरी बात है रहमत, यानी वह नरमी और हमदर्दी जो बीमारी , बुढ़ापे
और मुश्किल वक़्त में भी साथ निभाए।
आयत यह भी बताती है कि यह मुहब्बत और रहमत अल्लाह ने ख़ुद रखी है। इसलिए
इसके बढ़ने की दुआ भी उसी से की जा सकती है।

यह रिश्ता इतना गहरा क्यों है, इसका इशारा एक और आयत में मिलता है: "ऐ लोगो, अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा
बनाया। "2 पति और पत्नी की असल एक ही है, और रब भी एक ही है। इसी लिए वे एक दूसरे
के साथी हैं, और एक दूसरे के दुख सुख को अपना समझते हैं।

एक दूसरे का लिबास

इस नज़दीकी को समझाने के लिए क़ुरआन
ने एक बहुत प्यारी मिसाल दी है: "वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो। "3 यहाँ एक ही लफ़्ज़
दोनों के लिए आया है। लिबास इंसान के सबसे क़रीब होता है। वह उसकी कमियों

□□□□□ □□ □□□

□□ □□□□□□□ □□

□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□

□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □ □□ □□□□□□

□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□

□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□

□□□□□□ □□□□□ , □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□ , □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□

□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □ □□ □□□□□□□ □□□□□□ : "

□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□

□□□□□□□ □□ □□□□ , □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□

□□□□□ □□ □□□□ , □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□

□□□□□ □□□□□ "6 □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □ □□

□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ , □□ □□□□ □□□□□ □□

□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□

□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□□

□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ : "□ □□□□□

□□ , □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ , □□ □□□□

□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□

□□□□ □□□□ "7 □□□□□

□□□□□□ : [1] □□□□□□ 30:21, [2] □□□□□□ 4:1, [3] □□□□□□ 2:187, [4] □□□□□□ 4:21, [5] □□□□□□ 33:7, [6] □□□□ □□ -□□□□□□ 5063, [7] □□□□□□ 25:74.

Revision #1

Created 2026-11-02 10:53:36 UTC by Danish Nayeem

Updated 2026-11-02 10:53:37 UTC by Danish Nayeem